रामचरितमानस में जीवन मूल्य

संपादक
सतीश कुमार भारद्वाज

© लेखक

ISBN : 978-81-943929-9-6

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 150/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 5/- (अन्य देश)

RAMCHARITMANAS MEIN JEEVAN-MULYA
Edited by Dr. Satish Bhardwaj

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

13. रामचरितमानस और ललित निबंधों में जीवन-मूल्यों का समावेश 89
आरती जैन
14. तुलसी का रामचरितमानस 95
प्रा. नयन भादुले-राजमाने
15. तुलसीदास के रामचरितमानस में वैश्विक जीवन-मूल्य : पर्यावरणीय समन्वय (विश्व की पर्यावरणीय चिंताओं के समाधान के रूप में) 99
उमा कांत
16. मानस के आदर्श और मानव-जीवन 104
डॉ. करुणा पांडे
17. रामचरितमानस में वैश्विक जीवन-मूल्य 110
श्रीमती सुशीला बचन
18. सामाजिक जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में 'रामचरितमानस' 115
संजय कुमार

को शब्दों की माला में पिरोता है।

संदर्भ

1. रामचरितमानस (अयोध्या कांड, अरण्यकांड, उत्तरकांड)
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध सरंचना और काव्य चिंतन
3. निबंधकार विद्यानिवास मिश्र : डॉ. ज्ञान सिंह एम. चंदेल
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. आधुनिक हिंदी गद्य : उदभव एवं विकास-प्रो. सोनकांबले पद्मानंद।

तुलसी का रामचरितमानस

प्रा. नयन भादुले-राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी रात्रीचे वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर.
bhadulenayan13@gmail.com

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम माने जाते हैं और भारतवर्ष बहुत पुराने काल से अखिल संसार के लिए आदर्श रहा है। रामकाव्य वस्तुतः मानवीय दिव्य प्रतिभा की एक ऐसी उत्कृष्ट चिरस्थायी उपलब्धि है, जो न केवल भारतीय समाज के सभी वर्गों द्वारा प्रत्युत विदेश में भी, सम्मानित-समादृत होकर यथोचित ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

रामकथा–काव्य की एक विशाल विस्तृत धारा वाल्मीकी रामायण से लेकर वर्तमान समय तक शतधा होकर अखंड अविरत रूप में प्रवाहमान होती रही है। रामकथा पर इस दीर्घ कालावधि में असंख्य काव्य ग्रंथ देशी-विदेशी भाषाओं में रचे गये। और इस प्रकार, रामकथा भारत के कोने-कोने में ही नहीं, अपितु देश-विदेशों में भी व्याप्त होकर भारतीय ही नहीं, वरन समग्र एशियाई संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है।

तुलसी पूर्व राम के संपूर्ण जीवन-चरित्र के चित्रण के बदले आंशिक चरित्र की घटनाओं का वर्णन ही अधिक पाया जाता है। कई कवियों की रचनाएँ फुटकर मुक्तक काव्य के रूप में ही मिलती हैं, जिनमें रामकथा की अपेक्षा राम-भक्ति के प्रचार-प्रसार को और भी अधिक प्रश्रय मिला और रामरक्षा स्तोत्र, राममंत्र जोग, रामाष्टक जैसी रामभक्ति, भावना-मूलक रचनाएँ जनसामान्य को रामोपासना की प्रेरणा देती रहीं। इस काल में राम-जन्म, भरत-मिलाप, अंगद-पैज जैसी राम के आंशिक जीवन पर आधारित कुछ रचनाएँ इधर-उधर पायी जाती हैं, परंतु राम के समग्र चरित्र के अंकन की ओर कवियों का बहुत कम ध्यान रहने के कारण गोस्वामी तुलसीदास के अतिरिक्त मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र के सर्वांग परिपूर्ण जीवन का दर्शन कराने का प्रयास उनके पहले किसी कवि ने किया नहीं है।

तुलसी तक आते-आते राम-भक्ति के विकास के साथ-ही-साथ रामकथा को

भक्ति के साँचे में ढालने की प्रवृत्ति बढ़ गयी थी। जिसके परिणामस्वरूप कई सांप्रदायिक रामायणों की निर्मिती हो गयी और मूल वाल्मीकीय रामकथा को रामभक्ति के अनुरूप आकार देने के लिए उसमें यथावश्यक परिवर्तन भी किए गये।

रामभक्ति-शाखा के प्रवर्तक के रूप में गोस्वामीजी का स्थान मूर्धन्य है। गोस्वामीजी के प्रामाणिक ग्रंथों की संख्या भी उनके जीवनवृत्त की तरह ही विवादास्पद रही है। विभिन्न विद्वानों ने रचना की विभिन्न संख्याएँ बताई। परंतु उनमें राम से संबंधित केवल निम्नलिखित 10 ग्रंथ ही बहुसंख्यक विद्वानों द्वारा प्रमाणित माने गये है– 1. रामलला नहछू, 2. रामाज्ञा प्रश्न, 3. जानकी-मंगल, 4. रामचरितमानस, 5. गीतावली, 6. विनयपत्रिका, 7. बरवै रामायण, 8. दोहावली, 9. कवितावली और, 10. हनुमान बाहुक।

इनमें से केवल तीन ही प्रबंधात्मक रामकाव्य है–1. 'रामचरितमानस', 2. 'रामलला नहछू', 3. 'जानकी मंगल'। महाकाव्य के रूप में उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना की है। जो विश्व-साहित्यस्तर के एक महान ग्रंथ के रूप में विख्यात है। काव्य-सौश्ठव, भक्ति तथा उच्चस्तरीय जीवनादर्श की त्रिवेणी की यह पूत-पावन मानस -धारा शताब्दियों तक जन जीवन को अनुप्राणित करती आयी है और आगे भी करती रहेगी।

रामचरितमानस दोहा-चौपाई पद्धति में अवधी भाषा में लिखित हिंदी का यह एक सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। दोहा-चौपाइयों के अतिरिक्त बीच-बीच में इसमें सोरठे, हरिगीतिका आदि अन्य छंद भी आ गये हैं। प्रायः 4 चौपाइयों के बाद एक दोहा इस क्रम में कुल 5100 चौपाइयाँ हैं। तुलसीदास की यह एक अमर कलाकृति है। इसका रचनारंभ अयोध्या में वि.स. 1661 चैत्र शुक्ला 9 मी. मंगलवार को हुआ और तुलसीदास ने काशी में आकर उसे समाप्त किया।

इस ग्रंथ का संगठन पुराणों के अनुकरण पर संवाद शैली में होने के कारण तदनरूप इसमें एक साथ ही चार-चार कथाएँ संवादात्मक रूप में चलती हैं, बीच-बीच में अनेक उपकथाएँ भी आती है और अपना काम करके निकल जाती हैं। यह एक चरित्र-प्रधान ग्रंथ है। इसकी रचना में तुलसी ने रामायण, अध्यात्म-रामायण, प्रसन्न राघव नाटक, हनुमन्नाटक, भागवत और गीता का ही मुख्य रूप में आधार लिया है, परंतु मूल कथा में अनुकूल परिवर्तन करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र का आदर्श एवं उदात्त चरित्र प्रस्तुत किया है। यही नहीं, राम के भक्तों के निष्कलुष चरित्र के वर्णन के रूप में भी उदारता, क्षमा, त्याग, धैर्य और सहनशीलता आदि सामाजिक शिवत्व के गुणों से युक्त मानवता के उच्च आदर्शों को जनता के सम्मुख रखा है। 'रामचरितमानस' भक्तिपरक काव्य के रूप में एक भक्ति-रस प्रधान रचना होते हुए भी इसमें श्रृंगारदि अन्य सभी रसों की सुंदर संस्थिति भी हम पाते है। श्रृंगार

के वर्णन में तुलसीदासजी ने मर्यादा का या नैतिक बंधनों का कहीं भी अतिक्रमण नहीं किया है।

काव्य-कौशल्य की सभी विशेषताओं का 'मानस' एक सुंदर संगम है। सजीव एवं सूक्ष्म चरित्रांकन, भावानुकूल भाषा, संपूर्ण जीवन का चित्रण, वार्तालापों की सजीवता एवं स्वाभाविकता, संयत श्रृंगार-वर्णन पे इस महाकाव्य की विशेषताऐं हैं। आज के यंत्र-युग में भी इस ग्रंथ को देशी-विदेशी भाषाओं में अनुदित किया जाता है इससे बढ़कर इस ग्रंथ की श्रेष्ठता का उत्कृष्ठ प्रमाण दूसरा नहीं हो सकता।

तुलसी ने राम को अवतार के रूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए उनके राम के चारित्रिक व्यवहार बाह्यतः मानवीय भले ही लगते हों, परंतु है वे मूलतः अवतार की लीलाएँ ही। तुलसीदास ने कथावस्तु की अपेक्षा चरित्रांकन को ही अधिक महत्त्व दिया है। कथा का महत्त्व तुलसी की दृष्टि में इसलिए भी नहीं था कि रामकथा एक लोक-विख्यात कथा थी। तुलसी के चरित्रांकन की एक विशेषता यह है कि 'मानस' के राम, कौसल्या, दशरथ, जनक, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, हनुमान, अंगद, सीता प्रमुख पात्रों का चारित्रिक परिचय ग्रंथ की भूमिका में ही सांकेतिक रूप में 'वंदना प्रकरण'[1] के अंतर्गत उन्होंने दिया है। तुलसी सदैव एवं सर्वत्र मर्यादावादी रहे हैं। 'मानस' के पात्रों को तो उन्होंने संयमशील रूप में प्रस्तुत किया है, परंतु उनके स्वभाव के वर्णन में उन्होंने स्वयं भी कहीं मर्यादा का अतिक्रम नहीं किया है।

तुलसी ने जन-कल्याण को ही अपनी कृति का चरम उदिष्ट बनाया है, साथ ही साथ राम-चरित को उत्तमोत्तम रूप देने का भी प्रयास किया है। तुलसी ने समास-शैली का प्रयोग किया है तथा विवेचन संवादात्मक शैली में है। ग्रंथ का अंगीरस भक्ति है। रस-व्यंजना में सर्वत्र मर्यादा से काम लिया है। तुलसी का विवेचन अलंकार बहुल है। काव्य अनेक छंदात्मक हैं।

तुलसी की भाषा-शैली सरलता, स्वाभाविकता एवं शब्द संपन्नता का गुण पाया जाता है। सुयोग्य शब्द चयन में तुलसीदास सिद्धहस्त हैं। ग्रंथ में महाकाव्य के प्रमुख लक्षण पाये जाते है। प्रकृति चित्रण भी सफल रहा है। नख-शिख वर्णन में औचित्य एवं मर्यादा की ओर तुलसी का विशेष ध्यान रहा है।

तुलसीदास ने 'मानस' में व्यक्ति, परिवार और समाज के सुंदर आदर्श प्रस्तुत किए हैं। व्यक्ति से ही समाज बनता है। परिवार और राज्य भी समाज के ही लघु और विशाल रूप हैं। तुलसी ने इसलिए 'मानस' में व्यक्ति के परिवार, समाज एवं राज्य के प्रति कर्तव्यों के उत्कृष्ट आदर्श स्थान-स्थान पर प्रस्तुत किए हैं।

'मानस' में राम द्वारा पृथ्वी को निशाचर हीन बना देने की प्रतिज्ञा करने का उल्लेख मिलता है।[2] 'सुग्रीव-राम की मित्रता के लिए अग्नि को साक्षी रखा गया है।'[3]

अंततः कह सकते हैं, तुलसी ने समाज और संस्कृति के बहुविध बहुरंगी चित्र

अपनी कृति में प्रस्तुत किए हैं। एक आदर्श समाज की कल्पना करके उसका चित्र भी अपने ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। साथ ही में जनता को अधःपतित दशा से उभारने का प्रयत्न किया है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य, गृह, शिक्षा, नारी, शासन-व्यवस्था, उत्सव समारोह, वर्णाश्रम व्यवस्था, संस्कार आदि सबके आदर्श रूप प्रस्तुत किए है। सामाजिक विश्वास एवं मान्यताओं के चित्रों द्वारा तुलसी ने ग्राम समाज तथा लोक जीवन के हमें दर्शन कराये हैं। साथ ही में तुलसी ने ग्रामीण नर नारियों के मनोभावों का भी सुंदर चित्रण किया है। ग्रंथ के कर्ता अद्वैत वेदांत मत के प्रवर्तक होने के कारण ब्रह्म, जीव (आत्मा)', जगत, माया, मुक्ति, ज्ञान, भक्ति आदि के विषय में विचार प्रगट किए है। ग्रंथ का मुख्य प्रतिपाद्य भक्ति ही है। तुलसी का निरूपण अधिक पांडित्यपूर्ण है। अपनी प्रतिभा के बल पर अपनी भाषा के साहित्य में उत्कृष्ट रचना प्रदान की है।

संदर्भ

1. 'मानस' बालकांड, 16, 1 से 18, 10।
2. 'मानस' अरण्य, 9, 9-10।
3. 'मानस' किश्किं, 4, 9-10।
4. मंगलाक्षता सं. डॉ. सरोजनी बाबर, मनोहर ग्रंथ माला प्रकाशन, 20।
5. आर्या रामायण, स्व. के.वि. गोडबोले, 2018 वि.।
6. विभिन्न भाषाओं में रामायण-विकीपीडिया।
7. भक्तिकाव्य का समाजदर्शन-प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2007।